यीशु ने उनके पांव धोए
(13:1-17)

सन 1983 की बात है, मुझे यूहन्ना 13:1-17 में से पुरुषों की एक रिट्रीट में संदेश देने के लिए कहा गया था। सभी पत्थर से बने आग सेंकने वाले चूल्हे के सामने एक बड़े भोजनकक्ष में बैठे थे। पाठ आरम्भ करने के लिए, मैं एक बर्तन और तौलिया लेकर उस आदमी की ओर बढ़ा जिसने पहले समझाने में सहायता के लिए मेरा साथ देने की सहमति जताई थी। (मैंने किसी और से भी बात की थी, पर उसने कहा था कि यह ''बहुत झंझट वाला काम'' होगा।) मेरे उस आदमी के सामने घुटने टेकने, उसकी जुराबें व जूते उतारने, और उसके पांव धोने पर कमरे में पूरी तरह से चुप्पी छा गई। मुझे यह अनुमान नहीं था कि इस घटना से हर कोई या यहां तक कि मैं भी इतना व्याकुल हो जाऊंगा! हमने यीशु द्वारा अपने चेलों से ऐसा ही करने के बारे में पढ़ा था, सुना था और बातें भी करते थे, पर जब मैंने स्वयं किया तो यह कुछ अजीब और परेशान करने वाला लगा। पुरुषों की उस रिट्रीक में होने वाली बातों पर विचार करते हुए जब मैं उस रात का ध्यान करता हूं, तो मानता हूं कि आज के पांव धोने का अनुभव यीशु द्वारा अपनी मृत्यु के निकट ''चेलों के पांव धोने'' (13:5) के क्षण के नाजुक, भयभीत और परेशान करने वाले क्षण का पूरा परिचय था।

फसह के पर्व से थोड़ा पहले (13:1),[1] यीशु खाना खाने के लिए अपने चेलों के साथ मिला। उस दिन बैतनिय्याह से आते समय सड़कों में धूल ही धूल थीं और गरमा-गरमी काफी हो गई थी।[2] उस शाम उन्होंने भोजन खाने के लिए बैठने से पहले पांव नहीं धोए। ऐसे समाज में जहां लोग खाना भूमि पर बैठकर, एक कोहनी धरती पर टेककर खाते थे, आपके पास बैठे व्यक्ति के पांव गंदे होना एक गम्भीर बात थी। पांव धोने के लिए कमरे में बर्तन और तौलिया तो था, परन्तु कोई सेवक नहीं था जो इस काम को करता। इसलिए वे दिन भर की धूल मिट्टी जमे पांव होने के बावजूद खाना खाने लगे। वे अभी भोजन खाने ही वाले थे कि यीशु ने उठकर अपनी कमर पर पटका बांधा, बर्तन में जल डाला और चेलों के पांव धोने और उन्हें अपने तौलिए से सुखाने के लिए खड़ा हो गया। निश्चय ही, यीशु के एक से दूसरे चेले तक जाने पर कमरे में व्याकुल करने वाली चुप्पी छा गई होगी। कमरे में उपस्थित लोगों में से यीशु ही सबके पांव क्यों धो रहा था?

यीशु उस रात अपने इस कार्य से धूल साफ करने से कहीं बड़ा काम कर रहा था। वह अपने चेलों को अपनी मृत्यु और उनके उद्देश्य के लिए तैयार कर रहा था। चेलों के पांव

धोना उस बलिदान जो उसने शीघ्र ही क्रूस पर देना था, अर्थात जो शुद्धीकरण यीशु के लहू द्वारा सम्भव कराया जाना था और परमेश्वर के राज्य के पूरी तरह से नये मूल्य की पूर्व परछाई थी। यीशु अपने चेलों को मसीही सेवा की प्रकृति सिखाने के लिए पांव धोने का नमूना दे रहा था।

सेवा प्रेम दिखाने का एक ढंग है (13:1)

यूहन्ना रचित सुसमाचार में अध्याय 13 से एक नया भाग आरम्भ होता है। अध्याय 13 से 17 को आम तौर पर यीशु का ''विदाई संदेश'' कहा जाता है। सार्वजनिक शिक्षा की तुलना में जो यीशु की अपनी आरम्भिक सेवकाई का मुख्य भाग था, यह भाग उसके और चेलों के निजी अर्थात गूढ़ संवाद को दिखाता है। इस भाग में एक अंतर यह है कि ''प्रेम'' शब्द पहले से अधिक बार मिलता है। अध्याय 1 से 12 में प्रेम के केवल छह ही हवाले हैं, जबकि अध्याय 13 से 17 में प्रेम का उल्लेख 31 बार हुआ है! दो बार तो अध्याय 13 की पहली आयतों में ही इसका वर्णन मिल जाता है।

यदि हम समझना चाहते हैं कि यीशु ने अपने चेलों के पांव क्यों धोए या वह क्रूस पर क्यों मरा, तो हमें उसके प्रेम को समझकर आरम्भ करना चाहिए: ''... जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत को छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से जो जगत में थे, जैसा वह प्रेम रखता था अंत तक वैसा ही प्रेम रखता रहा'' (13:1)। यीशु के कार्यों को समझने से पहले, हमें उसके मन की प्रशंसा करनी पड़ेगी। चेलों के पांव धोते हुए यीशु का मन क्रोध, निराशा, घबराहट या रोष से नहीं बल्कि प्रेम से भरा हुआ था। यदि हम यीशु की तरह सेवा करना चाहते हैं तो हमारे लिए भी, प्रेम से शुरुआत करनी ज़रूरी है। बहुत से लोग जो यह ज़ोर देते हैं कि हमें भी यीशु की तरह ही सेवा करनी चाहिए, वे वहां से जहां से यीशु ने किया था अर्थात प्रेम करने वाले मन से आरम्भ करने को तैयार नहीं होते।

बाद में इसी अध्याय में, यीशु ने समझाया कि किस प्रकार परमेश्वर के राज्य की सबसे बड़ी बात प्रेम ही है:

> मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो (13:34, 35)।

सेवा, यदि यह सचमुच मसीही सेवा है, तो इसका आरम्भ प्रेम से ही होना चाहिए।

इस बात की कोई सीमा नहीं है कि प्रेम हमें क्या करने के लिए प्रेरित कर सकता है। यदि हम दोष, भय, या घमण्ड के कारण सेवा करते हैं, तो हमारी सेवा प्रेम करने वाले मन से की गई सेवा की तुलना में कम पाई जाएगी। किसी मसीही मिशन अस्पताल में दाखिल एक मरीज ने देखा कि नर्सें कैसे सारा दिन कठिन से कठिन और गंदे से गंदा काम करती हैं

जो उसने पहले कभी नहीं देखा था। एक दिन उसने एक नर्स से कहा, ''मैं तो यह काम लाख रुपए लेकर भी न करूं!'' वह मसीही नर्स काम रोककर उस आदमी की ओर देखकर मुस्कराई और कहने लगी ''मैं भी नहीं!'' प्रेम हमें सेवा के ऐसे कार्य करने के लिए प्रेरित करता है जिस तरह कोई और नहीं कर सकता।

सेवा आत्मविश्वास से ही हो सकती है (13:2-4)

कई साल पहले जब मैं अफ्रीका में था, एक दिन स्थानीय भाषा में मसीही सेवा के विचार का अनुवाद करने के लिए एक साथी मिशनरी स्थानीय भाषा के अनुवाद में सहायक के साथ काम कर रहा था। जब वह अपने संदेश में इस बात पर आया जहां वह कहना चाहता था, ''सब मसीहियों के लिए सेवक होना आवश्यक है,'' तो उसके सहायक ने कहा, ''नहीं! तुम्हारे कहने का यह अर्थ नहीं हो सकता!'' बेशक इस आदमी ने कई वर्षों से यीशु के बारे में सुना था, पर उसे नहीं लगता था कि एक प्रचारक मसीही लोगों से सेवक बनने जैसे छोटे काम के लिए कह सकता है।

''सेवा करना,'' ''दास बनना,'' ''सेवा'' सभी ऐसे शब्द हैं जिनका स्वर ''निर्बल'' शब्दों की तरह लगता है। लगता है कि यह कार्य अशिक्षित, निर्धन और कमज़ोर लोग करते हैं। सेवा को आम तौर पर ऐसे लोगों का काम समझा जाता है, जो केवल सेवा ही करने वाले हैं। वह सेवा केवल इसलिए करता है क्योंकि उसे सेवा करने के लिए विवश किया जाता है।

पर यीशु ने इसके मूल अर्थ को ही बदल दिया। उस रात यीशु ने चेलों के पांव धोए, उसने उन बारहों के पांव किसी धमकी या निर्बल होने या उनसे छोटा होने के कारण नहीं धोए थे। यूहन्ना ने लिखा है:

> यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं, और परमेश्वर के पास जाता हूं। भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अंगोछा लेकर अपनी कमर बान्धी (13:3, 4)।

यीशु ने जो कुछ किया वह आत्मविश्वास और सामर्थ होने के कारण ही किया था। उसने दिखाया कि सेवा का आधार निर्बल होना नहीं, बल्कि सामर्थ है। जब कोई मसीही सचमुच समझ जाता है कि वह परमेश्वर की नज़र में कितना प्रिय और महत्वपूर्ण है, तो उसे सेवा करने का आत्मविश्वास मिल जाता है। यीशु ने चेलों के पांव धोकर यह नमूना दिया।

सेवा से परमेश्वर की ओर दिशा मिलती है (13:1-5)

अध्याय 13 में यहूदा (आयतें 2,18-30) और पतरस (आयतें 31-38) दो ऐसे चेले हैं जिन्हें सब चेलों में प्रमुख दिखाया गया है। दोनों के पांव यीशु ने धोए थे, और दोनों ही

अगले कुछ घण्टों में उसके लिए सबसे बड़ी निराशा थे क्योंकि यहूदा ने उसे पकड़वा दिया था और पतरस ने उसका इन्कार किया था। वास्तव में यह ''जानकारी'' सेवा के स्वभाव से मुक्त करने वाला अद्‌भुत प्रकाशन है। दूसरे लोगों द्वारा हमारी सेवा को ग्रहण करने का ढंग इसे अच्छा नहीं बनाता। हमारा काम सेवा करना और प्रतिफल के लिए परमेश्वर की ओर देखना है।

जिस मण्डली में मैं सेवा करता हूं वहां ''उसका घर'' नाम से परोपकार की सेवा होती है, जिसमें जरूरतमंदों को भोजन तथा कपड़े उपलब्ध कराए जाते हैं। हमें कई बार पता चलता है कि लोगों ने हमसे झूठ बोलकर हमारी उदारता का अनुचित लाभ उठाया है। क्या इससे हमारी सेवा का महत्व कम हो जाता है ? कदापि नहीं! हम समझदारी से काम करना चाहते हैं, और यह नहीं मानते कि हमें उन लोगों को दान देना चाहिए जो इसका इस्तेमाल शराब या नशे का सामान खरीदने के लिए करते हों। पर, यदि हमसे गलती हो जाती है, तो हम यह दान भरोसे और उदारता को ध्यान में रखकर करते हैं। हो सकता है कि कोई हमारा अनुचित लाभ उठाए, फिर भी यह जरूरी है कि हम परोपकार करते रहें। क्योंकि यीशु ने उस रात यहूदा और पतरस के पांव धोए थे इसलिए हमें भी अपने साथी लोगों की सेवा करते रहने के लिए उत्साहित किया जाता है, उन लोगों की भी जिन्होंने कभी हमारी सेवा या हमारे दानों का अनुचित लाभ उठाया हो। मसीही व्यक्ति के लिए, सेवा का अर्थ प्रतिफल की ओर ध्यान लगाना नहीं है, क्योंकि यह काम तो यीशु का है!

मिशनरी लोग इस सिद्धांत का एक और उदाहरण हैं। वे सुसमाचार के प्रचार के लिए कहीं जाने से पहले ही इस बात को समझते हैं कि कुछ लोग उन्हें ठुकराएंगे, कुछ उनका इस्तेमाल करेंगे और कई लोग उन्हें गालियां भी देंगे। वे परिणामों को देखकर नहीं बल्कि इसलिए जाते हैं क्योंकि ऐसा करना उचित है, परिणाम चाहे कुछ भी हों।

सेवा के लिए पहले सेवा कराना आवश्यक है (13:6-10)

जब यीशु पतरस के पास आकर उसके पांव धोने लगा, तो पतरस ने उसे यह कहते हुए रोका, ''हे प्रभु, क्या तू मेरे पांव धोता है ?'' (13:6, 7)। यीशु ने पतरस से कहा कि जो कुछ वह कर रहा था पतरस को उस समय उसकी समझ नहीं आनी थी, पर धीरे-धीरे उसे समझ आ जानी थी। पतरस अभी भी उसे रोकते हुए यह ज़ोर दे रहा था कि यीशु उसके पांव कभी नहीं धोएगा। फिर यीशु के यह कहने पर कि, ''यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं'' (13:8) पतरस अवश्य ही चौंक गया होगा। उसे इस बात की समझ तो नहीं थी कि यीशु के लिए यह क्यों आवश्यक था, पर उसे यह समझ थी कि इसकी आवश्यकता थी। पतरस, जो हमेशा जोश में आ जाने वाले के रूप में प्रसिद्ध है, ने यीशु से उसकी पूरी देह को धोने के लिए कहा!

पतरस को यीशु की बात से यह स्पष्ट होता है कि परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में अपने ऊपर भरोसा रखना आत्मिक रूप से कितना विनाशकारी हो सकता है। जब तक हमें लगता है कि हमने अपना उद्धार कमाया है, तब तक हम में कृतज्ञता और परमेश्वर के प्रति

दीनता नहीं आएगी। जिस कारण, हमें दूसरों की सेवा करने की इच्छा या प्रेरणा नहीं मिलेगी। ऐसी स्थिति में हम अपने आपको अपना ईश्वर बना लेते हैं! दूसरी ओर जब हमें यह समझ आ जाए कि हमें परमेश्वर के अद्‌भुत अनुग्रह से उद्धार मिला है, तो हम कृतज्ञ, विनम्र और अपने उद्धारकर्त्ता के उदाहरण के अनुसार चलने को तैयार होते हैं। किसी की चिंता न करने वाली कलीसिया को दूसरों की सेवा करने के लिए कैसे प्रेरित किया जा सकता है? डरा या धमकाकर नहीं, बल्कि उन्हें यह याद दिलाकर कि यीशु ने क्रूस पर ''उनके पांव धोए!'' यीशु के बलिदान से सेवा कराना सच्ची मसीही सेवा का पहला कदम है।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में आम तौर पर यीशु की बात के एक ही समय में कई अर्थ मिलते हैं। 13:1-17 में भी यही हो रहा था। पहले तो, यह एक दूसरे के गंदे पांवों की ओर झुककर खाना खाते हुए लोगों के समूह पर दया और आतिथ्य का एक कार्य था। इसके गहरे अर्थ में, यीशु इस अवसर का इस्तेमाल चेलों को (फिर से) यह सिखाने के लिए कर रहा था कि वह एक सेवक था और उसके पीछे चलने वालों के लिए भी वैसे ही सेवा करनी आवश्यक है। इस बातचीत में एक और संकेत भी था कि यहूदा यीशु को पकड़वाएगा (13:10,11)।

सेवा करने का अर्थ अनुसरण करना है (13:12-16)

अपने परेशान चेलों के पांव धोने के बाद, यीशु अपने स्थान पर बैठ गया। यीशु के कुछ कहने की प्रतीक्षा करते हुए वे बारह चेले चुप रहे होंगे। अंततः उसने उनसे पूछा, ''क्या तुम समझे कि मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया?'' (13:12)। उसके अगले शब्द न केवल भोज की उस स्थिति के लिए ही थे बल्कि आज हमसे भी बात करते हैं:

> तुम मुझे गुरु, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं। यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए। क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो। मैं तुम से सच सच कहता हूं, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से (13:13-16)।

यीशु ने सेवा की! वह हमारा प्रभु है। इसलिए यदि हम उसके जैसे बनना चाहते हैं तो हमें भी दूसरों की सेवा करनी चाहिए!

इस अध्ययन में, मैंने उन लोगों के ''वीरतापूर्ण'' उदाहरणों की बात नहीं की है जिन्होंने यीशु के नाम से सेवा की थी। मैं यह प्रभाव नहीं छोड़ना चाहता कि यीशु की सेवा करना केवल बहादुर अर्थात उन्हीं लोगों का काम है जिन्हें दान मिला हो या जो कठिन परिस्थितियों में फंसे होते हैं। यीशु हम *सभी* को (और हम में से अधिकतर लोग सामान्य जीवन बिताते हैं) अपने घरों में और कलीसियाओं में, अपने दफ्तरों में या जहां भी हमें दूसरों के ''पांव धोने'' का अवसर मिले अपना अनुसरण करने के लिए बुलाता है। मसीही

होने के नाते हमारे लिए ऐसा करना अजीब नहीं है क्योंकि यह तो यीशु के नमूने के अनुसार चलना ही है।

सेवा का अर्थ कुछ करना है (13:17)

बीस वर्ष पूर्व, जब मैं यूनिवर्सिटी में पढ़ता था, तो मैंने और मेरे मसीही मित्रों ने सेवा के बारे में काफी चर्चा की। वास्तव में यीशु द्वारा चेलों के पांव धोने की कहानी हमारी चर्चा की सबसे पसन्दीदा आयतें थीं। जवानी के अक्खड़पन में, हमें लगा कि हमने यीशु की भूली बिसरी शिक्षा को ''खोज लिया'' है। अब, वर्षों बाद, मैं और मेरे मित्र देखते हैं कि सेवा करने की अपेक्षा सेवा की बातें करना आसान है। आम तौर पर सेवा करने के बजाय इस पर केवल चर्चा ही की जाती है। यीशु सेवा की ''बातें करने'' से अधिक चाहता है अर्थात वह हमें वैसे ही ''करने'' के लिए भी पुकारता है! चेलों को यह बताने के बाद कि वह चाहता था कि वे दूसरों की सेवा करने के उसके उदाहरण का अनुसरण करें, यीशु ने कहा, ''तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो'' (13:17)। याकूब ने बाद में इसी शिक्षा को दोहराया: ''परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं'' (याकूब 1:22)।

सेवा का व्यावहारिक पहलू दक्षिणी अफ्रीका की एक ग्यारह वर्षीय लड़की की कहानी में मिलता है। वह एक निर्धन किसान की बेटी थी और अपनी मां की मृत्यु के समय उसकी आयु केवल ग्यारह वर्ष थी। अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ी होने और परिवार में दो छोटे बच्चे होने के कारण वह जल्द ही दूसरे बच्चों की ''मम्मी'' बन गई। उसने पूरी जिम्मेदारी से यह कठिन कार्य किया जिस कारण जल्दी ही उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया और उसे इलाज के लिए एक मिशन अस्पताल में दाखिल कराना पड़ा। अस्पताल में एक बहुत अच्छी मसीही स्त्री जो उससे मिलने आती थी, पूछने लगी, ''क्या आप चर्च जाती हैं?'' लड़की ने उत्तर दिया, ''नहीं मै'म।'' स्त्री ने पूछा, ''क्या तुम कभी संडे स्कूल गई हो?'' फिर, लड़की केवल यही उत्तर दे पाई, ''नहीं मै'म।'' ''फिर,'' वह स्त्री कहती रही, ''जब तुम मर जाओगी तो परमेश्वर को क्या बताओगी?'' साफ़ सफ़ेद चादर के अन्दर से अपनी कमज़ोर बाहें निकालते हुए, उस छोटी लड़की ने कहा, ''मै'म, मैं उसे अपने हाथ दिखा दूंगी।'' वह, सचमुच एक सेवक थी। उसका जीवन और उसके शब्द हमें याद दिलाते हैं कि सेवा की बातों का इतना महत्व नहीं है जितना सेवा करने का!

सारांश

चेलों के पांव धोने के बाद, यीशु ने तौलिया तो रख दिया पर सेवा करना नहीं छोड़ा। अगले दिन उसने एक पुराना रोमी क्रूस उठा लिया और अपनी इच्छा से हमारे लिए मर गया। तौलिया और क्रूस दोनों यीशु के जीवन के उपयुक्त संकेत हैं। दोनों ही बलिदान के संकेत हैं, दोनों ही हमें याद दिलाते हैं कि जो गंदा है उसे साफ़ किया जा सकता है, यीशु ने दोनों का इस्तेमाल अपना प्रेम हमें दिखाने के लिए किया और दोनों ही हमें अपने प्रभु के उदाहरण

का अनुसरण करने के लिए पुकारते हैं। क्या आप अपना तौलिया और क्रूस उठाकर (मरकुस 8:43) आज यीशु के पीछे चलेंगे?

पाद टिप्पणियां

[1]देखें 12:1. [2]मत्ती 20:20-28 और मरकुस 10:35-45 से संकेत मिलता है कि यीशु और उसके अनुयायियों के यरूशलेम जाते हुए ''सबसे बड़ा'' कौन की बहस तेज़ होती जा रही थी।